ऐ अल्लाह हमें मआफ कर दे और हमारी मदद कर

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दुआ करना इबादत है, (अहमद तिर्मिज़ी, अबू दावूद) फरमायाः इन्सान अपने रब के अत्यंत करीब उस वक़्त होता है जब वह सजदे की हालत में होता है इसलिये (इस हालत में) ज़्यादा से ज़्यादा दुआ करो'' (सहीह मुस्लिम)

ऐ अल्लाह हम तेरे गुनेहगार बन्दे हैं, हमने तेरी इबादत में कोताही की है, नमाज़ रोज़ रखने में गफ़लत की है, हम तेरी बख्शिश के तलबगार हैं, तू मआफ करने वाला है, तू हमारी मुश्किलों को दूर करने वाला है, हमारी दुनियावी समस्याओं का समाधान सच मुच तू ही करने वाला है, तेरा फैसला ही असल फैसला है, तू जो कुछ अपने बन्दों के बारे में फैसला करता है, ठीक करता है, तू हर तरह की बारीकियों से वाक़िफ है, हम इन्सानों की अक़्ल कोताह है, तू ही हर चीज़ के बारे में बेहतर जानता है, हम तेरी रहमत के तलबगार हैं, हम आज़माइशों से जूझ रहे हैं, तू हम पर दया करूणा कर, तू ही हमारा निगेहबान है, तू ही हमें हर आजमाइशों से बचा कसता है, ऐ अल्लाह हम से कर्म में जो कोताही हुई है उसको मआफ कर दे, तू ही हमारा रखवाला है हम तो तेरे गुनेहगार बन्दे हैं, तो तू हमारे गुनाहों को मआफ कर दे, उम्मते मुस्लिमा इस वक़्त विभिन्न तरह की आजमाइशों में है तू इससे हम को निकाल दे। हम दुआओं से तेरी मदद चाहते हैं।

''उस अल्लाह के नाम के साथ जिसके नाम के होते हुए कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुंचा सकती, जमीन की हो या आसमानों की, वह खूब सुनने वाला खूब जानने वाला है''। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद ४२३, इब्ने माजा २/३३२)

''ऐ हमेशा जिन्दा रहने वाले, ऐ हमेशा बाक़ी रहने वाले मैं तेरी ही रहमत के जरिये फरयाद करता हूं तू मेरा काम संवार दे और मुझे आंख झपकने के बराबर भी मेरे अपने सुपुर्द न कर'' (देखिए सहीहुत तरगीब वत तरहीब १/२७३)

''ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से दुनिया व आख़िरत में मआफी और आफियत चाहता हूं। ऐ अल्लाह बेशक मैं तुझ से मआफी और आफियत (सुख शान्ति) का अनुरोध करता हूं अपने दीन और दुनिया और अपने परिवार व माल में, ऐ अल्लाह मेरी पर्दे वाली बातों पर पर्दा डाल और मेरे भय को (अम्न में) बदल दे। ऐ अल्लाह! तू मेरी हिफाज़त कर मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरी दाएं तरफ से और मेरी बाएं तरफ से और मेरे ऊपर से और मैं तेरी अज़्मत (महानता) की पनाह (शरण) चाहता हूं इस बात से कि अचानक अपने नीचे से हेलाक हो जाऊं'' (अबू दाऊद, इब्ने माजा, देखिए सहीह इब्ने माजा २/३३२)

''मैं अल्लाह से मआफी मांगता हूं और उसके हुजूर तौबा करता हूं'' (बुखारी, मुस्लिम)

मासिक

इसलाहे समाज

नवंबर 2019 वर्ष 30 अंक 11

रबीउल अव्वल 1441 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़्क़

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये
❑	टोटल पेज	28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद

दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. ऐ अल्लाह हमें मआफ कर दे, और हमारी मदद कर 2

2. पापी और पाप में अन्तर कीजिए 4

3. निराधार बातों पर ध्यान न दें 6

4. इस्लाम में औरतों का स्थान 8

5. रिपोटः कार्य समिति सत्र 10

6. क़ुरआन की अज़मत व फज़ीलत 17

7. शिक्षा और प्रशिक्षण के द्वारा आतंकवाद का एलाज संभव है 19

8. शराब के नुकसानात 23

9. अम्न व शान्ति का संदेश... 25

10. वक़्त और सेहत का स्तेमाल 27

11. कलैन्डर 2020 28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- www.ahlehadees.org

पापी और पाप में अन्तर कीजिए

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

इस दुनिया में नेकी और भलाई के काम करने वालों का बड़ा मक़ाम व स्थान है और अल्लाह के यहां इस की बड़ी प्रशंसा और सराहनीय है। नेकी और भलाई के तमाम कामों में इस नेकी और सत्कर्म की अहमियत व फज़ीलत और इस का पुण्य और ज़्यादा बढ़ जाता है जो सिर्फ और सिर्फ अल्लाह के लिये और उसके बताए गये तरीक़े के अनुसार हो और जो उसके भटके हुए बन्दों को उसकी तरफ लौटने, उसकी तरफ पलटने, उसी से लौ लगाने और उसी से नफा व नुकसान की आशा रखने के लिये आमादा करता हो यहां तक कि बन्दा अपने पालनहार की तरफ पलट आए और उसी का होकर रह जाए। इस वक़्त अल्लाह यही नहीं कि बन्दों की पिछली तमाम गफलतों, पापों और ख़ताओं को मआफ कर देता है बल्कि बन्दे की कल्पना से कहीं ज़्यादा उससे खुश होता है। सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम में है कि जब तुम में से कोई बन्दा तौबा करता है तो अल्लाह तआला उस बन्दें से बहुत ज़्यादा खुश होता है'' ऐसे बन्दों से बहुत ज़्यादा मुहब्बत भी करता है जैसा कि कुरआन में है ''अल्लाह तआला तौबा करने वालों और पाक (पवित्र) रहने वालों को पसन्द करता है'' (सूरे बक़रा-२२२) और परिणाम स्वरूप उस बन्दे को अथाह नेमतों से नवाज़ता है। कुरआन में है ''हां बेशक मैं उन्हें बख्श देने वाला हूं जो तौबा करें और ईमान लाएं नेक अमल करें और राहे रास्त (सच्चे मार्ग) पर भी रहें'' (सूरे ताहा-८२)

अल्लाह का दर्वाज़ा उसके गुमराह और भटके बन्दों के लिये हर घड़ी खुला हुआ है। कुरआन में है '' (मेरी जानिब से) कहा दो कि ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है तुम अल्लाह की रहमत से निराश न हो जाओ, निसन्देह अल्लाह तआला सारे गुनाहों को मआफ कर देता है, वास्तव में वह बड़ी बख्शिश बड़ी रहमत वाला है'' (सूरे जुमर ५३) ऐ काश कि आज इन्सान पापी और पाप में अन्तर करता और कम से कम अपने जैसे इन्सानों का हमदर्द और शुभचिंतक और उसके दुखदर्द का साथी बन जाता। अगर स्वयं को नेक कहलाने वाला इन्सान बुराई को उसकी श्रेणी में रखता और बदकार और पापी का हमदर्द बन कर उसको इस घातक मर्ज़ से मुक्ति दिलाने के लिये हर तरह से लग जाता तो देश व समाज और घर सब इन घातक व भौतिक मर्ज से पाक हो जाते और दुनिया मुहब्बत व अम्न का गहवारा (पालना) बन जाती।

तौबा और माफी मांगने का दरवाजा खुला हुआ है मोसलाधार बरखा है कि मुसलसल बरस रही है और हर अच्छा और बुरा जल, थल में रहने वाला अपनी योग्यता के अनुसार लाभान्वित हो रहा है। यह तो बन्दों के ऊपर है कि वह अल्लाह की रहमत, करूणा से कितना फायदा उठा रहा है।

हम तो मायल ब करम हैं कोई सायल ही नहीं, राह दिखलाएं किसे कोई रहरू मंज़िल ही नहीं

बहरहाल नेकी नेकी नेकी है, चाहे वह छोटी हो या बड़ी। भलाई

के छोटे छोटे कामों को भी मामूली नहीं समझना चाहिए। नेकी का काम करना चाहिए और भलाई को भैलाना चाहिए। गफलत की चादर को उतार कर फैंक देनी चाहिए, अपने रवैये में परिवर्तन लाना चाहिए। तौबा, और माफी मांग करके अपने रचयिता और स्वामी की तरफ पलटना चाहिए। जान लीजिए कि आपकी नेकी और आप के ज़रिए किए गए नेक काम का बदला दुनिया ही में मिलना शुरू हो जाता है। मानव सेवा भलाई का काम है। आज मुसलमानों को अपने वजूद के लिये अपने दीनी व समुदायिक अस्मिता की बका के लिये, देश व मानवता के निमार्ण के लिये अपने ऊपर लागू होने वाले ईश्वरीय कर्तव्य और बन्दों के अधिकारों को अदा करने करने के लिये, इन्सानी जीवन के मक़सद को पूरा करने के लिये और व्यक्त व जमाअते मुस्लिम होने के नाते दुनिया में अल्लाह की तरफ से सौंपी हुई अमानत उसके ज़रूरत और पात्र बन्दों को लाभान्वित करने के लिये मानव-सेवा में लगने और इस मैदान में आगे बढ़ने की ज़रूरत है। आज जबकि दुनिया में बसने वाले असंख्य लोग दीन व ईमान और उसके तकाज़ों से दूर होने की वजह से हिलाकत व बर्बादी की राह पर अग्रसर हैं और अफसोस इस बात का है कि अधिकांश लोगों को इसका एहसास व आभास तक नहीं है। ऐसे में आज हर मुसलमान और दूसरों की शुभचिंतक उम्मत के हर व्यक्ति और जमाअत की जिम्मेदारी है कि अपने उन भाइयों को उनके दयालू रब से मिलाने और भूले भटके लोगों को अल्लाह और उसकी रहमतों से जोड़ने की मुख्लिसाना (निःस्वार्थता) कोशिश करें क्यों कि पैगम्बरों के दुनिया में भेजने का यही मक़सद था और यही जिम्मेदारी आज मुसलमानों की है ताकि इन्सान लोक और परलोक दोनों में कामयाब हो जाए या कम से कम इस पर दलील पूरी हो जाए अर्थात जिम्मेदाारी अदा हो जाए। आज मुसलमानों ने अपनी इस जिम्मेदारी को भूल करके अपने आप को और अपने मिशन को भुला दिया है जिसकी वजह से इन्सान अपनी सहीह जगह पर चलने से असमर्थ है। इन्सानों के बीच दूरियां बढ़ रही हैं और कोई किसी का पुर्साने हाल नहीं है अजब अफरातफरी और नफसी नफसी का आलम है। इन अकहनीय हालात एवं परिस्थितियों में मुसलमान अगर अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा और विगत महानता (अज़्मते रफता) को वापस लाना चाहता है तो उसे अल्लाह तआला की तरफ से दी गई जिम्मेदारी को निभानी और उनके बन्दों के सिलसिले में वादे को निभाने और भलाई करनी होगी। अल्लाह की तरफ बुलाने और सत्य की गवाही का काम सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य समझ कर करना होगा। दीन का प्रचार केवल अल्लाह की खुशी और अल्लाह के बन्दों की भलाई के लिये करनी होगी। डाक्टर को जिस तरह से मर्ज से दुश्मनी होती है उसी तरह मरीज़ से मुहब्बत और हमदर्दी होती है। इससे कहीं ज़्यादा हमदर्द और शुभचिंतक एक आध्यात्मिक डाक्टर, ज्ञानी, प्रशिक्षक और प्रचारक को बनना पेड़ गा बल्कि आम डाक्टर के मुक़ाबेल में एक प्रचारक का रोल एवं भूमिका निस्वार्थता और हमदर्दी कहीं ज़्यादा होनी चाहिए। क्योंकि सांसारिक मर्ज अगर इन्सान के शरीर को लग जाएं तो मरीज़ चन्द दिनों या महीनों तड़पूता और दुख महसूस करता है फिर आत्मा मनुष्य के शरीर से निकल जाती है और वह दुनियाइवी कठिनाइयों से मुक्ति पा जाता है मगर आध्यात्मिक मर्ज इन्सान के लिये इस तरह घातक, दुखदाई और स्थिर होता है कि अगर इन्सान तौबा न करे तो इन से छुटकारा पाना असंभव नहीं तो कठिन ज़रूर है। ''पस ऐ आखों वालो इबरत (पाठ) हासिल करो''

निराधार बातों पर ध्यान न दें

नौशाद अहमद

कर्म इनसान के चरित्र को दर्शाता है, यह इन्सान को समाजी आधार प्रदान करते हैं उसके कर्म ही की बुनियाद पर उसके बारे में राय काइम की जाती है, इसी बेस पर उस के सहीह और गलत होने का फैसला किया जाता है, इनसान का जाहिरी कर्म ही उसकी पहचान होती है और यह कर्म उसकी कामयाबी और नाकामी की नेव बन जाती है।

इन्सान के बारे में आम तौर से तीन तरह की राय होती है। एक राय वह है जो इन्सान अपने बारे में सोचता और समझता है कि वह सहीह या गलत है, और उसका कर्म अल्लाह के नज़दीक कितना मक़बूल है?

दूसरी राय वह है जो एक इन्सान दूसरे के बारे में काइम करता है कि अमुक इन्सान किस मेआर का है, उसकी खूबी क्या है, उसकी जिन्दगी के कर्म किस स्टैण्डर्ड के हैं?

तीसरी बात और हक़ीक़त वह है जो संसार के पालनहार ने एक इन्सान के बारे में तय कर रखा है। असल फैसला तो ईश्वर ही का है कि किसी इन्सान के कर्म की गुणवत्ता क्या है बल्कि जो दूसरे लोग राय काइम करते हैं वह सहीह भी हो सकती है और गलत भी हो सकती है। लेकिन अल्लाह का फैसला इन्सान के बारे में कभी गलत नहीं हो सकता क्योंकि वह हर तरह त्रुटि और गलतियों से पवित्र है, उसके यहां किसी भी तरह की नाइन्साफी नहीं हो सकती है क्योंकि वह हर इन्सान के पल पल के कर्म पर नज़र रखता है इस लिये गलती की कोई संभावना नहीं है इन्सान और ईश्वर में यह बहुत ही बुनियादी अन्तर है। इस सच्चाई को मान लेने के बाद इन्सान की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह अपने मन का स्तेमाल न करके उसके पालनहार ने इस संसार में जीवन गुजारने का जो सिद्धांत और नियम बताए हैं उसके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करे।

आम तौर पर देखा जाता है कि किसी इन्सान के गलत कर्म को उसके धर्म से जोड़ दिया जाता है, यह प्रवृत्ति बिलकुल साधारण हो चुकी है जबकि सच्चाई यह है कि किसी इन्सान के गलत कर्म का उसके धर्म से कोई संबन्ध नहीं होता, वह गलत कर्म करने का खुद ही जिम्मेदार है, उसके धर्म का इसमें कोई दोष नहीं है, धर्म तो इन्सान को मानवता की तरफ ले जाता है, जो लोग किसी के गलत कर्म को उसके धर्म से जोड़ देते हैं वह यक़ीनन सहीह ज्ञान नहीं रखते, वह जजबात के बहाव में बह जाते हैं जबकि इन्सान को अल्लाह ने अक़ल जैसी बहुत बड़ी नेमत दी है, उसका स्तेमाल करके वह बहुत बड़ी गलत फहमी (मिस अण्डर स्टैंडिंग) से बच सकता है। लेकिन अक़ल का सहीह स्तेमाल न करने की वजह से एक बहुत बड़ी बुराई का कारण बन जाता है।

यह हम इन्सानों की जिम्मेदारी है कि हम एक दूसरे को समझने की कोशिश करें दूसरों में गलतियां और खामियां निकालने से पहले अपना आत्मनिरक्षण करें, गलत फहमी से बचने का यह अच्छा तरीक़ा हो सकता है, इसके अलावा दूसरों के गलत प्रोपैगण्डों से दूर रहें, अफवाहों पर ध्यान न देकर सच्चाई की तलाश का प्रयास करें, क्योंकि सहीह ज्ञान न होने से जीवन पटरी से उतर जाती है जिसका परिणाम नुकसान और घाटा के सिवा कुछ भी नहीं है। कितने सौभाग्य की बात है उन लोगों के लिये जो सच्चाई की तलाश में रहते हैं और उनके लिये कितने दुर्भाग्य की बात है जो हमेशा उड़ाई हुई और निराधार बातों पर विश्वास कर लेते हैं। अल्लाह की निगाह में अच्छा बनने की कोशिश करें, अपनी और दूसरों की निगाह में भी अच्छा बनने की कोशिश करें और किसी प्रौपैगण्डे का शिकार न हों, अफवाहों से दूर रहें, धैर्य से काम लें, हर मामले में अपनी राय देने से बचें, दुआओं का एहतमाम और नमाज़ वगैरह की पाबन्दी करें, यह सकारात्मक सन्देश देने का बहुत अच्छा तरीक़ा है।

आज समाज में एक दूर से दूर होने और अजनबीपन पैदा होने का सबसे बड़ा कारण है कि हम ने एक दूसरे को समझने की कोशिश नहीं की और अपनी बातों को एक दूसरे तक पहुंचाने में असफल रहे। सवाल यह है कि हम मानव समुदाय कब तक अजनबीपन का शिकार रहेंगे, और कब एक दूसरे को समझने का प्रयास करेंगे?

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

इस्लाम में औरतों का स्थान

सईदुर्रहमान सनाबिली

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगो औरतों के बारे में अल्लाह से डरो। यह तुम्हारे बाद घरों की हिफाज़त करने वाली हैं। अल्लाह के नाम पर तुम इन्हें लेकर आए और इनके मां बाप ने भी सिर्फ अल्लाह की वजह से उनका निकाह आपके साथ किया है तो उनके बारे में अल्लाह से डरो। अगर औरत अल्लाह के अधिकारों और बन्दों के अधिकारों में से हर एक को निभाती है, नेकी, सच्चाई, पवित्रता, लज्जा, सदव्यवहार, को अपनी ज़िन्दगी का अनिवार्य हिस्सा समझती है तो ऐसी औरतों को दुनिया की सबसे बेहतर नेमत क़रार दिया गया है। अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः पूरा संसार फायदा उठाने की चीज़ है और दुनिया में जितनी भी लाभदायक चीज़ें हैं उनमें सबसे बेहतर नेक औरत है। (सहीह मुस्लिम १४६९)

इस्लाम ने औरत को बेटी की हैसियत से प्यार और संरक्षण दिया वर्ना अरब के लोग तो बच्चियों को जीवित दफन कर देते थे। अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसके यहां कोई बच्ची पैदा हुई और उसने उसको जीवित दफन न किया, न उसको कमतर जाना और न लड़कों को इस पर वरीयता दी तो इस बच्ची की वजह से अल्लाह उसे जन्नत में दाखिल करेगा। (मुसनद अहमद १/२२३, मुस्तद्रक हाकिम ७३४८। इमाम हाकिम ने इस हदीस को सहीह करार दिया है और इमाम ज़हबी की भी यही राय है और अहमद शाकिर ने इस हदीस को हसन क़रार दिया है) उक़बा बिन आमिर रज़िअल्लाहो अन्हो का बयान है कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेटियों को नापसन्द न करो क्योंकि वह अनमोल होती हैं। मुसनद अहमद ४/१५१ शैख अल्लामा अलबानी ने इसे सहीह करार दिया है सिलसिलातुल अहादीसिस सहीहा ३२०६)

अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स दो लड़कियों को पाले पोसे यहां तक कि वह प्रौढ़ (बालिग़) हो जाएं तो वह क़यामत के दिन मेरे साथ यूं होगें और यह कहते हुए पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी उंगलियों को मिला लिया (सहीह मुस्लिम २६३१)

बीवी की हैसियत से भी इस्लाम धर्म ने औरतों को ऊंचा स्थान दिया। इस्लाम ने बीवी के साथ अच्छा व्यवहार करने पर बल दिया। मर्दों पर ज़ोर दिया कि किसी भी तरह से औरतों के अधिकार का हनन नहीं होना चाहिए बल्कि हर हाल में उनके अधिकारों की पासदारी और संरक्षण होना चाहिए ताकि मानव समाज सुख चैन और खुशहाली के मार्ग पर अग्रसर रहे। हज़रत आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

फरमायाः तुम में से बेहतर वह है जो अपने घर वालों के लिये बेहतर हो और मैं तुम में सब से ज़्यादा बेहतर हूं अपने घर वालों के लिये'' (सुनन तिर्मिज़ी-२५२३)

मुआविया बिन हीदा रज़िअल्लाहो अन्हो ने पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि बीवी का क्या हक़ है तो आपने फरमायाः जो तुम खुद खाओ उसे भी वही खिलाओ, जो खुद पहनो उसे भी पहनाओ और उसके चेहरे पर न मारो, और उसको बुरी सूरत या बुरी बात न कहो और उससे नाराज़ होकर अलग न हो'' (सुनन तिर्मिज़ी ११६२, अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है, देखिए सहीहा, २८४)

इस्लाम ने मां की हैसियत से औरत को बड़ा सम्मान और महान स्थान दिया है और मां को सबसे ज़्यादा अच्छे व्यवहार का हक़दार करार दिया है। हज़रत अबू हुरैरहा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक सहाबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और कहा कि ऐ अल्लाह के पैगम्बर लोगों में मेरे अच्छे व्यवहार का सबसे ज़्यादा पात्र कौन है अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) ने फरमाया तुम्हारी मां, फिर पूछा कि इसके बाद कौन पात्र (मुस्तहिक़) है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम्हारी मां, फिर पूछा कि कौन मुस्तिहिक़ है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारी मां फिर पूछा कि कौन मुस्तहिक है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम्हारे बाप (सहीह बुखारी ५९७१ सहीह मुस्लिम २५४८) इस हदीस से अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि मां की हैसियत से इस्लाम ने औरत को कितना सम्माननीय करार दिया है।

बहन की हैसियत से भी इस्लाम ने औरत को सम्मान दिया है। अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि जिसके तीन बहनें या तीन बेटियां, दो बहने या दो बेटियां हों और वह उनके साथ अच्छा व्यवहार करे और उनके बारे में अल्लाह से भय खाए तो ऐसे इन्सान को जन्नत मिलेगी। (सुनन तिर्मिज़ी, १८३५, अल अदबुल मुफरद, ७९ शैख अलबानी ने इसे सहीह करार दिया है, देखिए, सहीहुत तरगीब वत तरहीब)

इस्लाम ने ख़ाला को मां का दर्जा दिया है। अली बिन अबू तालिब रज़िअल्लाहो अन्हो तआला अन्हो का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ख़ाला मां के दर्जे में है। (सुनन अबू दाऊद २२७८)

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहो अन्हो का बयान है कि एक शख्स अल्लाह के रसूल के पास आया और कहा कि ऐ अल्लाह के पैगम्बर मुझसे एक पाप हो गया है। आपने पूछा कि तुम्हारी मां जीवित हैं? उसने कहा नहीं, आपने पूछा क्या तुम्हारी खाला जीवित हैं? उसने कहा हां। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि जाओ उनके साथ अच्छा व्यवहार करो। (सुनन तिर्मिज़ी १९०४, अल्लामा अलबानी ने इसे सहीह करार दिया है, देखिए सहीहुत तरगीब वत तरहीब २५०४) सारांश यह है कि इस्लाम ने औरतों को हर प्रकार के अधिकार दिए हैं और सतीत्व (इफ्फत व इस्मत) के संरक्षण का उपाय भी किया है। इस्लाम ने औरतों को जीवन, मीरास, शिक्षा, समता, खुलअ्, निकाह, महर का अधिकार दिया है यह ऐसे अधिकार हैं जो औरतों की आज़ादी का नारा लगाने वालों को यह नज़र नहीं आते हैं।

❑ ❑ ❑

रिपोर्ट:-संगठन-विभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का सत्र सफलता पूर्वक संपन्न

आतंकवाद और दाइश की कड़ी निन्दा

35वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स मार्च 2020 में

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का यह सत्र १३ अक्टूबर २०१४ अनुसार १३ सफ़्रूल मुजफ्फर १४४१ हिजरी रविवार को निर्धारित समय के अनुसार दस बजे मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी की अध्यक्षता में अहले हदीस कम्पलैक्स अबुल फज़ल इन्कलेव जामिया नगर ओखला नई दिल्ली में आयोजित हुआ जिसमें देश के अधिकांश राज्यों से आये सदस्यों और प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस इकाइयों के जिम्मेदारान ने प्रतिभाग लिया। सत्र का एजेण्डा निम्न था।

१. अमीर का संबोधन

२. पिछली कार्रवाई की पुष्टि

३. महा सचिव की रिपोर्ट

४. कोषाध्यक्ष की रिपोर्ट और मर्कजी जमीअत के निमार्ण कार्यों के लिये मालियात उपलब्ध कराने के लिये गौर, विचार विमर्श

५. ३५वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स के आयोजन पर विचार विमर्श

६. दावती, इस्लाही, मुल्की, मिल्ली और वैश्विक समस्याओं पर विचार विमर्श

७. जमीअत के आर्थिक स्थिरता के लिये विचार विमर्श

८. अन्य मामले अध्यक्ष की अनुमति से

सत्र का आरंभ मौलाना सैयद हुसैन मदनी, सचिव जमीअत अहले हदीस तिलंगाना की तिलावते कुरआन से हुआ। फिर एजेण्डा के अनुसार सम्माननीय अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने हकीमाना, उपदेशात्मक और ईमानवर्धक संबोधन किया।

सम्माननीय अमीर ने अपने संबोधन में हम्द व सलात के बाद सभा में उपस्थितगण हज़रात का स्वागत और उनका धन्यवाद किया। दावत, शिक्षा, प्रशिक्षण, संयम, एकता, राष्ट्रीय सदभावना और मानवता की सेवा एवं इस्लाम की शिक्षाओं को देश बन्धुओं तक पहुंचाने की ज़रूरत पर जोर दिया। आतंकवाद, दाइश और इस जैसे आतंकी संगठनों की सख्त शब्दों में निन्दा की। इस सत्र में मर्कज़ी जमीअत के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के सभी विभागों, इस्तकबालिया, दफतरी मामले, दावती काम, शिक्षा प्रशिक्षण, संगठन, प्रकाशन व प्रसार, मकतबा तर्जुमान, मीडिया सेल, इफता व मज्लिसे तहकीक इल्मी, एहसाईयात, निर्माण कार्य, मालियात, जन कल्याणकारी, राष्ट्रीय एवं समुदायकि मामलों जैसे विभागों के तहत अल्लाह की मदद और अमीरे मोहतरम की व्यवहारिक व सक्रिय रहनुमाई, निरन्तर प्रयासों और

जमाअती मित्रों के सहयोग से जो गतिविधियां और सेवाएं अंजाम पाई हैं उनकी संक्षिप्त रिपोर्ट पेश की। जिसकी बाज इसलाहत के बाद पुष्टि की गई। कोषाध्यक्ष अलहाज वकील परवेज़ ने हिसाबात पेश किए जिस पर हाउस ने सन्तुष्टि और खुशी का इज़हार किया। मीटिंग में जमीअत के कामों का जायज़ा लिया गया और भविष्य में दावती तालीमी, संगठनात्मक, निमार्ण कार्य और कल्याणकारी प्रोजेक्टों और मानवीय सेवाओं को रफतार देने पर गौर किया गया। इसके अलावा जमीअत के माली स्थिरता ख़ास तौर से अहले हदीस मंज़िल के निमार्ण कार्यों को पूरा करने और अहले हदीस कम्पलैक्स में निर्माणाधीन बहुउददेशीय बिलडिंग के लिये चन्दा और देश व्यापी स्तर पर अहले खैर हज़रात से ज़्यादा से ज़्यादा सहयोग करने की अपील की गई। मीटिंग में एक अहम फैसला यह भी किया गया कि मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा ३५वीं आल इंडिया अहले हदीस कांफ्रेन्स मार्च २०२० में आयोजित हो गी जिसके कनवीनर मर्कज़ी जमीअत के कोषाध्यक्ष अलहाज वकील परवेज होंगे। इस मीटिंग में देश, समुदाय और विश्व समस्याओं से संबन्धित महत्वपूर्ण करारदाद और प्रस्ताव मंजूर किए गये।

कार्य समिति की क़रारदाद में कहा गया है कि मुसलमानों की मुश्किलात का बुनियादी सबब दीन से दूरी है अतः मुसलमानों को चाहिए कि वह कुरआन और हदीस की तरफ रूजू करें और पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तरीके और सहाबा किराम की जीवनी और आचरण की रोशनी में अपनी इस्लाह करें और दूसरों को भी इन्सानियत का भूला हुआ सबक याद दिलाएं। क़रारदाद में अन्तरधर्मीय वार्ता की ज़रूरत पर जोर दिया गया क्योंकि दुनिया की अधिकतर आबादी इसलाम की शिक्षाओं से नावाकिफ, अनभिज्ञ और विभिन्न प्रकार के भ्रमों की शिकार है। सत्र में देशीय और विश्व परिदृष्य में मसलकी एकता और आपसी सम्मान की ज़रूरत पर ज़ोर देते हुए अपील की गई कि हर मसलक के लोग एक दूसरे के ख़िलाफ राय व्यक्त करने और सोशल मीडिया पर नकारात्मक टिप्पणी से बचें। कुछ असमाजिक तत्व अपने स्वार्थ या क़ौम के अन्दर विखराव पैदा करने के मकसद से सलफियत को निशाना बनाते रहते हैं जो कि एक अनुचित व घृणित और समुदाय के लिये हानिकारक कर्म है। इसी तरह अन्दुरूनी तौर पर बाज़ जिम्मेदारान के मन माने और ग़ैर उसूली कामों पर सावधान किया गया और सख्ती से कहा गया कि वह अमीर के मश्वरे के बग़ैर कोई काम न करें। क़रारदाद में प्रचारकों इमामें और अध्यापकों के १२वे आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स को लाभकारी और प्रशंसनीय मानते हुए इस पर मुबारकबाद पेश की गई है। बाबरी मस्जिद से संबन्धित अदालत में रोज़ाना सुनवाई का स्वागत किया और इसे सन्तुष्टिजनक क़रार दिया और अपने इस मोकिफ को दोहराया कि सम्माननीय अदालत इसे सिलसिले में जो भी फैसला करेगी वह इन्हें स्वीकार्य होगा। देश की विभिन्न जेलों में बन्द नौजवानों के मुक़दमात को जल्द से जल्द निमटाने की अपील की गई और अदालत से बाइज्ज़त बरी हुए नौजवानों को उचित मुआवज़ा दिए जाने की मांग की गई। देश और विदेश में होने वाले आतंकी वाक़आत और दाइश जैसे आतंकी संगठनों की सख्त निन्दा की गई। देश में एन. आर. सी. को लागू करने को न्याय पर आधारित क़रार देते हुए इसकी आड़ में खास वर्ग

को मानसिक उत्पीड़न में लिप्त रखने की नकारात्मक कोशिश पर चिन्ता व्यक्त की गई और जिन लोगों के नाम शामिल होने से रह गये हैं इन्सानी हमदर्दी की बुनियाद पर उनका मसला हल करने की अपील की गई।सोशल मीडिया, प्रिन्ट और इलेक्ट्रानिक मीडिया को बाज कम्यूनिटीज़ के खिलाफ प्रोपैगण्डा और उन्हें बदनाम करने के लिये स्तेमाल किये जाने की निन्दा की गई। भाई चारा का माहौल बनाने और देश के नागरिकों में सांप्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया गया। देश के विभिन्न हिस्सों में होने वाले मोब लिंचिंग के वाक़आत की निन्दा करते हुए तमाम धार्मिक गुरूओं से अपील की गई कि वह मोबलिंचिंग को रोकने के लिये अपना कर्तव्य निभाएं और सरकारें असमाजिक तत्वों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें। विभिन्न राज्यों में सैलाब से होने वाले जानी व माली नुकसानात पर रंज व गम और प्रभावितों के साथ सौहार्द व्यक्त की गई और देशवासियों और सरकारों से अपील की गई कि सैलाब प्रभावितों की ज़्यादा से ज़्यादा मदद करें। दिन बदिन बेरोज़गाी, मंहगाई, रिश्वत खोरी पर चिंता व्यक्त की गई और इनके खात्मे के लिये सरकारों से ठोस इक़दामात करने की अपील की गई। क़रारदाद में कश्मीर से संबन्धित इस मोकिफ़ को स्पष्ट किया गया कि कश्मीर भारत का अटूट हिस्सा है और कश्मीरी हमारे भाई हैं और उनका दुख दर्द पूरे देश का दुख व ग़म होना चाहिए और दफा ३७० के खातमे को लेकर स्वार्थियों और मूर्खों को किसी तरह की अशान्ति फैलाने का मौक़ा नहीं दिया जाना चाहिए और न ही किसी तरह के प्रोपैगण्डे का शिकार होना चाहिए। उप महादीप (बर्रेसग़ीर) में बढ़ते हुए तनाव को चिन्ता की दृष्टि से देखा गया और संजीदा वार्ता के ज़रीए तमाम समस्याओं के समाधान की अपील की गई। सऊदी अरब के तेल पलांट पर हमले की सख्त शब्दों में निन्दा की गई और असल मुज्रिमीन के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की ज़रूरत पर जोर दिया गया। फलस्तीन में इस्राईल की ज़ालिमाना व आक्रामक कार्रवाइयों की निन्दा करते हुए विश्व समुदाय से इस समस्या के समाधान की अपील की गई। इसके अलावा देश, समुदाय की महत्वपूर्ण शख़्सियतों के निधन पर शोक व्यक्त किया गया।

क़रारदाद का मूल लेखः

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति के इस सत्र का एहसास है कि मुसलमानों की मुश्किलात का बुनियादी सबब दीन से दूरी है जिसके नतीजे में हमारे जीवन में इस्लामी शिक्षाओं का अभाव, नई नस्ल की सहीह तिर्बयत (प्रशिक्षण) न होने की वजह से बेराहरवी का बढ़ता हुआ रूझान और दुनिया की लालच व मोह और भौतिकता का तूफान बपा है अतः मुसलमानों को चाहिए कि वह दोबारा कुरआन व हदीस की तरफ लौटें और पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श और सहाबा किराम के जीवन व चरित्र की रोशनी में अपनी इस्लाह करें और दूसरों को भी मानवता का भूला हुआ पाठ याद दिलाएं।

कार्य समिति का यह सत्र अन्तर धर्मीय वार्ता की ज़रूरत पर जोर देता है क्यों कि दुनिया की अधिकांश आबादी इस्लाम के अकीदए तौहीद (एकेश्वर वाद-आस्था) और अन्य इस्लामी शिक्षाओं से अपरिचित है और विभिन्न प्रकार की गलत फहमियों (भ्रांतियों) का शिकार है

इसी तरह इन्सानों खास तौर से देश बन्धुओं के दर्मियान जो दूरियां पैदा हो गई हैं इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि हम एक दूसरे के धर्म के बारे में सहीह ज्ञान न रखने की वजह से गलत फहमी में लिप्त हैं अतः इस सिलसिले में प्राथमिकता के आधार पर काम करने की ज़रूरत है।

कार्य समिति का यह सत्र देशीय और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में मसलकी एकता और आपसी सम्मान की ज़रूरत पर जोर देते हुए अपील करता है कि हर मसलक के लोग एक दूसरे के खिलाफ इजहारे खयाल (अभिव्यक्ति) और सोशल मीडिया पर नकारात्मक टिप्पणी करने से बचें। किसी मसलक (विचार धारा) के खिलाफ प्रोपैगण्डा करना अक़्लमन्दी नहीं बल्कि बुरे परिणाम का कारण बन जाता है।

वक्तन फवक़्तन (यदाकदा) कुछ असमाजिक तत्व सलफियत को अपने निजी सवार्थ या कौम के अन्दर खलफशार (विखराव) पैदा करने के मकसद से निशाना बनाते रहते हैं। कभी आतंकी संगठनों को इस का शाख़िसाना और कभी इसे अतिवादी नजरिया बावर कराने की अनुचित व घृणीय कोशिश करते रहते हैं जिसको कार्य समिति का यह सत्र सिरे से ख़ारिज करता है और इस तरह के जाने या अनजाने तौर पर दिए गए बयानात की कड़ी निन्दा करता है और साथ ही इस हकीकत को दोहराने में उसे कोई संकोच नहीं कि जितना सलफियत ने आतंकवाद के उन्मूलन, उसकी निन्दा और इसके खिलाफ जन साधारण को आगाह और सचेत करने में स्पष्ट भूमिका निभाई है किसी और ने नहीं निभाई। इसके बावजूद इस तरह की शरअंगेजी समझ से बाहर और कौम व मिल्लत के लिए अत्यंत खतरनाक और नुकसानदेह है।

इन्सान की जिन्दगी में शिक्षा, प्रशिक्षण और ट्रेनिंग की बड़ी अअहमियत है इससे इस्लाह के साथ साथ सक्रियता, संगठनात्मक तरीक़े से जिन्दगी गुज़ारने और जिम्मेदारी के एहसास के साथ कौम व मिल्लत (राष्ट्र एवं समुदाय) और मानवता की खिदमत का सलीक़ा भी आता है। इस परिप्रेक्ष्य में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति का यह सत्र इमामों, प्रचारकों और अध्यापकों के १२वें आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स के आयोजन को लाभकारी और प्रशंसनीय मानते हुए इस पर बधाई देता है और इस सिलसिले को जारी रखने की ज़रूरत पर ज़ोर देता है।

कार्य समिति का यह सत्र बाबरी मस्जिद के बारे में रोज़ाना सुनवाई का स्वागत करता है और इसे सन्तुष्टि जनक क़रार देते हुए इस पर हैरत व अफसोस का इजहार करता है जो मामले के अदालत में विचाराधीन होने के बावजूद अपने बयानात से देशवासियों को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं। हिन्दुस्तानी मुसलमानों का शुरू ही से यह दृष्टिकोण रहा है कि सम्माननीय अदालत इस सिलसिले में जो भी फैसला करेगी वह उन्हें स्वीकार होगा लेकिन बहुत खेदजनक बात है कि कुछ लोग अपने अनुचित बयानात से मानसिक उलझन पैदा करने की कुचेष्ठा कर रहे हैं।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस की कार्य समिति का यह सत्र देश की जेलों में बन्द नौजवानों के मुकदमात को जल्द से जल्द निमटाने की अपील करता हैं इसके अलावा जो नौजवान अदालत से बाइज़्ज़त बरी हुए हैं उनको उचित मुआवज़ा दिया जाए और उन अधिकारियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए जो फर्जी सबूतों के आधार पर नौजवानों को गिरफतार करके कामयाबी हासिल

करने की कोशिश करते हैं।

कार्य समिति का यह सत्र देश और विदेशों में होने वाले आतंकी वाकआत और दाइश जैसे आतंकी संगठनों की कड़ी निन्दा करता है और अपने इस दृष्टिकोण को दोहरता है कि आतंकवाद वर्तमान दौर का सबसे बड़ा नासूर है और यह पूरी मानवता की संयुक्त समस्या है। इसके अलावा यह सत्र आतंकवाद की आड़ में एक खास कमयूनिटी को आरोपित ठेहराने के रवैये को सरासर अन्याय और गैर इन्सानी हरकत करार देता है।

कार्य समिति का यह सत्र देश में घुसपैठ के खिलाफ कानूनी कार्रवाई को न्यायोचित करार देता है लेकिन एन.आर.सी की आड़ में एक विशेष वर्ग को मानसिक प्रताड़ना में लिप्त रखने की नकारात्मक कोशिश पर चिन्ता व्यक्त करते हुए भारत सरकार से मांग करता है कि वह ऐसे तत्वों के खिलाफ सख़्त कार्रवाई करे जो एन.आर.सी के हवाले से पक्षपाती बयान देकर सांप्रदायिक सौहार्द को प्रभावित करने की कोशशि कर रहे हैं और एन.आर सी में जिन लोगों के नाम शामिल होने से रह गए हैं इन्सानी हमदर्दी की बुनियाद पर उनकी समस्या का समाधान किया जाए।

कार्य समिति के सत्र का यह एहसास है कि कुछ लोग सोशल मीडिया और प्रिन्ट व इलेक्ट्रानिक मीडिया को बाज कम्यूनिटीज के खिलाफ प्रोपैगण्डा और उन्हें बदनाम करने के लिये स्तेमाल कर रहे हैं। ऐसे में हालात का तक़ाज़ा है कि सोशल मीडिया वगैरह पर होने वाले झूठे प्रोपैगण्डों का संजीदा तरीका से दलीलों से प्रभावी जवाब दिया जाए।

कार्य समिति का यह सत्र देश बन्धुओं से संगठित और बड़े स्तर पर संपर्क करके सांप्रदायिक वातावरण के नकारात्मक प्रभावों से आगह करने, भाई चारा का माहौल बनाने और देश के नागरिकों में सांप्रदायिक सदभावना को बढ़ावा देने और आपसी सहयोग के लिये प्रभावी प्रयास करने की ज़रूरत और इसके खिलाफ बयानात की प्रशासन को लिखित शिकायत देने की अपील करता है।

कार्य समिति का यह सत्र देश के विभिन्न हिस्सों में होने वाले मोबलिंचिग के वाक़आत की निन्दा करते हुए तमाम धार्मिक मार्गदर्शकों और धर्मगुरूओं से अपील करता है कि वह मोबलिंचिंग को रोकने के लिये संजीदा हों और अपना कर्तव्य निभायें और सरकारें असमाजिक तत्वों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें ताकि इस खतरनाक रूझान पर लगाम लगाई जा सके।

कार्य समिति का यह सत्र देश के विभिन्न राज्यों में सेलाब से होने वाले जानी व माली नुकसानात पर अपने रंज व गम और प्रभावितों के साथ हमदर्दी व्यक्त करता है और देशवासियों एवं सरकारों से अपील करता है कि मुसीबत की इस घड़ी में सैलाब प्रभावितों को ज़्यादा से ज़्यादा मदद करें। कार्य समिति का यह सत्र अपनी उप इकाइयों से विशेष अपील करता है कि वह सैलाब प्रभावितों को ज़्यादा से ज़्यादा राहत पहुंचाने में हिस्सा लें।

कार्य समिति का यह सत्र रोज़ बरोज बढ़ती बेरोजगारी, मंहगाई, रिश्वत खोरी पर अपनी चिंता व्यक्त करता हैं कयोंकि इनसे देश के वासी परेशान हैं और यह ऐसी समस्याएं हैं जो जीवन के हर विभाग को प्रभावित करती हैं और इनके नतीजे में लूटमार, चोरी, डाकाज़नी और धोकाधड़ी को बढ़ावा मिलता है अतः मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समीति का यह सत्र इन

समस्याओं के खातमे के लिये सरकारों से प्रभावी इकदाम करने की अपील करता है।

कार्य समिति का यह सत्र कश्मीर से संबन्धित अपने इस दृष्टिकोण को स्पष्ट करना ज़रूरी समझता है कि कश्मीर भारत का अटूट हिस्सा है और कश्मीरी हमारे भाई हैं और उनका दुख दर्द पूरे देश का दुख और गम होना चाहिए। कश्मीर के बारे में जिस तरह प्रोपैगण्डों, अफवाहों और आशंकाओं के ज़रिये निराशा फैलाने की कोशिश की जा रही है इससे संबन्धित यह सत्र देश व समुदाय, मानवता और सभी देशबन्धुओं की बेहतरी व भलाई के लिये संजीदा, चौकन्ना और होशियार रहने की अपील और अम्न व शान्ति, आपसी भाई चारा, राष्ट्रीय सदभावना, हमदर्दी और सहानुभूति का माहौल बनाए रखने का उपदेश देता है और कश्मीरी भाईयों के मामले और दफा ३७० के खातमे को लेकर दुश्मनों, स्वार्थियों और हासिदों को अगर किसी तरह की अशान्ति फैलाने का मौका मिलता हो, इससे बाज रहने की अपील करता है और पूरी ईमानी कुव्वत, हिकमत और अक़लमन्दी के साथ संविधान, कानून और देश भक्ति की रोशनी में हालात का सामना करने पर ज़ोर देता है इसी में देश और मिल्लत की भलाई है।

उप महादीप (बर्रेसगीर) में बढ़ते हुए तनाव को कार्य समिति का यह सत्र चिंता की दृष्टि से देखता है और दोनों देशों के शासकों से आशा करता है कि वह संजीदा वार्ता के जरीए तमाम समस्याओं का समाधान करेंगे क्योंकि जंग किसी भी समस्या का समाधान नहीं बल्कि तबाही व बर्बादी का पूर्वाभास (पेश ख़ेमा) है।

कार्य समिति का यह सत्र सऊदी अरब के तेल पलांटों पर हमले की सख्त शब्दों में निन्दा करते हुए असल अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की ज़रूरत पर ज़ोर देता है। मध्यपूर्व में अम्न व शान्ति को बहाल करना संयुक्त राष्ट्र संघ का दायित्व है जो लोग हौसी बागियों को शह दे रहे हैं उनको कानून की पकड़ में लाना अत्यंत आवश्यक है ताकि क्षेत्र में अम्न व शान्ति काइम रहे। सऊदी सरकार ने हमले के बाद जवाबी कार्रवाई की ताक़त रखने के बारवजूद जिस सब्र और संयम का प्रदर्शन किया है वह प्रशंसनीय होने के साथ पूरी दुनिया के लिये अम्न व शान्ति का पैगाम भी है।

कार्य समिति का यह सत्र फलस्तीन में इस्राईल के अत्याचार व बरबरीयत और वहां के निर्दोष वासियों के नरसंहार की सख्त निन्दा करता है और संयुक्त राष्ट्रसंघ से अपील करता है कि वह अपनी स्थापना के उददेशों को समझते हुए इस्राईल की आक्रामकता और जुल्म व बरबरीयत पर अंकुश लगाए। मध्यपूर्व में अशान्ति की सबसे बड़ी वजह इस्राईल का जालिमाना व्यवहार है उसको वैश्विक कानून का पाबन्द बना कर क्षेत्र में अम्न व शान्ति काइम करना और फलस्तीन में अम्न व शान्ति बहाल करना विश्व-समुदाय की जिम्मेदारी है।

कार्य समिति का यह सत्र मौलाना अब्दुल वहाब खिलजी रह० के जवान पुत्र मुहम्मद खिलजी, मदर्सा मत्लउल उलूम खनदक़ बाज़ार मेरठ के अध्यापक और महा सचिव के भाई अब्दुर्रहीम, सूबाई जमीअत आंध्रा प्रदेश के पूर्व अमीर मुहम्मद अब्दुर्रहमान फारूकी, इस्लाम जगत की प्रसिद्ध ज्ञानात्मक व शोधीय हस्ती मौलाना अबुल अश्बाल शाग़िफ़ बिहारी, प्रसिद्ध समाजी, सियासी मिल्ली व तालीमी शख्सियत और चियरमैन बिहार स्टेट फूड कमीशन प्रोफेसर मुहम्मद सलाम, जामिया इस्लामिया दरियाबाद के सचिव डा०

अतीकुर्रहमान बस्तवी की मां, कोषाध्यक्ष अलहाज वकील परवेज की दोनों बहन, सूबाई जमीअत अहले हदीस महाराष्ट्रा के पूर्व सचिव मौलाना अबू रिजवान मुहम्मदी की मां, रंगपुर कलिया नैपाल के अनस यासीन, शैखुल अरब वल अजम और जमीअत अहले हदीस हरयाणा के पूर्व अमीर मौलाना हकीम मुहम्मद इस्राईल नदवी, नागपुर की प्रसिद्ध समाजी व तालीमी शख्सियत मुहम्मद यूनुस अंसारी, महा सचिव की जवां साल भतीजी, अल मअहदुल आली के अध्यापक मौलाना अज़ीज़ अहमद सलफी के समधी अनवर अहमद, शहरी जीमअत अहले हदीस हैदराबाद व सिकन्दराबाद के अमीर मौलाना शफीक आलम खान के ताया व खुस्र जनाब नसीर आलम खान, सूबाई जमीअत अहले हदीस पंजाब के कार्यवाहक अमीर जनाब मुश्ताक़ अहमद की बहू और नेवासी, मौलाना अब्दुल वदूद मदनी मरहूम के लड़के और मौलाना अब्दुल कुददूस उमरी अमीर सूबाई जमीअत अहले हदीस मध्य प्रदेश के भजीते अब्दुल्लाह, जामिया रियाजुल उलूम दिल्ली के अध्यापक मौलाना मुहम्मद तलहा नदवी और मौलाना हाफिज जलालुददीन कासिमी के पिता जनाब मुतीउल्लाह चौहदरी वगैरह के इन्तेकाल पर रंज व गम का इज़हार और उनके परिवार वालों से शोक व्यक्त करता है और अल्लाह से दुआ करता है कि मरने वालों की कमियों को मआफ और नेकियों को कुबूल करके जन्नतुल फिरदौस में ऊंचा मक़ाम दे और परिवार एवं संबन्धियों को सबरे जमील की क्षमता दे। आमीन

❑ ❑ ❑

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

कुरआन की अज़मत व फज़ीलत

शमीम अहमद अंसार उमरी

सब लोगों में है अफज़ल व बेहतर वही इंसान
ख़ुद पढ़ता है औरों को पढ़ाता है जो कुरआन
अज़्मत का सज़ावार नहीं है वह मुसलमान
दिल जिस का है कुरआन की आयात से वीरान
वह शख्स हकीकत में मुसलमान नहीं है
जिस शख्स के किरदार में कुरआन नहीं है

है आम सभी के लिये कुरआँ की हिदायत
पढ़ कर इसे हासिल करे जो चाहे नसीहत
जिसको भी मयस्सर हुई कुरआन से निस्बत
वह साहबे अज़्मत है सज़ावारे फज़ील
अल्लाह ने कुरआन को जीशान बनाया
तज़कीर की ख़ातिर इसे आसान बनया

कुरआन का दस्तूर है दस्तूरे मुसावात
यकसाँ हैं हर इंसान के लिये इसकी हिदायात
इबरत के लिये इसमें हैं कौमों की हिकायात
हिकमत के ख़ज़ानों से भरी इसकी हैं आयात
कुरआन की तालीम से जो शख्स है ग़ाफ़िल
वहशी है वह तहज़ीब से आरी है वह जाहिल

जो लोग तरक्की की बुलन्दी पर गए हैं
कुरआं की हिदायत पर मुसलसल वह चले हैं
जो ज़िल्लत व ख़ुवारी में गिरफतार हुए हैं
नाकदरी-ए-कुरआन से पस्ती में गिरे हैं
चाहत है अगर जन्नते फिरदौस को पालो
कुरआन की आयात को सीने में बसा लो

कुरआन को पढ़कर जहां होती है नसीहत
होती है सकीनत वहां होती है सआदत
जिस घर में हुआ करती है कुरआन की तिलावत
हर शर से हुआ करती है उस घर की हिफाज़त

शैतान को भगाना है तो पढ़ लीजिऐ कुरआन
कुरआन को सुनकर नहीं रूक पाता है शैतान

जब भी हम कुरआन से दूर हुए हैं
कमज़ोर हुए बेबस व मअ्जूर हुए हैं
अग़यार की मातहती पे मजबूर हुए हैं
हम क़हरे खुदावन्दी में महसूर हुए हैं

हासिल थी जो पहले हमें ताक़त वह कहां है
जिन मुलकों के हाकिम थे हुकूमत वह कहां है

दिल में कभी न आने दें हम अपने तकब्बुर
हम तालिबे हक़ बनके रहें मह्‌वे तफक्कुर
कुरआन से हट कर न करें कोई तसव्वुर
कुरआन में करते रहें हम फिक्र व तदब्बुर

कुरआन से रिश्ता न हमारा कभी टूटे
रहमान अमल से न हमारा कभी रूठे

(जरीदा तर्जुमान १-१५ जुलाई २०१६)

शब्द	अर्थ
अज़्मत	महानता
फजीलत	श्रेष्ठता
अफजल	श्रेष्ठतम
वीरान	गैर आबाद
किरदार	चरित्र
नसीहत	उपदेश
मयस्सर	हासिल, प्राप्त
जीशान	अहम
तज़्कीर	उपदेश देना, याद दिलाना
मुसावात	समता
यकसां	समान
इबरत	पाठ
वहशी	अंजान, अनभिज्ञ
अग़्यार	अन्य लोग
आरी	खाली
हिदायत	शिक्षा, मार्गदर्शन

शब्द	अर्थ
जिल्लत, खुवारी	अपमान
नाकदरी	असम्मान
सकीनत	सुख
सआदत	सौभाग्य
शर	नुकसान, बुराई
कह्‌र	अज़ाब, प्रकोप
महसूर	घिर जाना
तकब्बुर	घमण्ड
तालिब	चाहना, मांगना
मह्‌व	मगन, व्यस्त
तफक्कुर	सोचना, गौर करना
तसौउर	अवधारणा
तदब्बुर	विचार करना
रहमान	कृपालु

शिक्षा और प्रशिक्षण के द्वारा आतंकवाद का एलाज संभव है : मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी का रेफ्रेशर कोर्स के अन्तिम सत्र से संबोधन

दिल्ली १४ अक्टूबर २०१६ सोमवार

प्रशिक्षण के बगैर शिक्षा की कोई हैसियत नहीं है बल्कि शिक्षा प्रशिक्षण (तर्बियत एवं ट्रेनिंग) के बगैर उल्टा ज़हर बन जाती है। अगर शिक्षा के साथ सहीह तर्बियत की जाए तो इन्सान रब का आज्ञापालक तो बनता ही है इन्सानियत का भी सच्चा शुभचिंतक और हमदर्द बन जाता है इसके बाद वह वही काम करता है जो रब की खुशी और मानवता के हित में होता है। आतंकवाद को न सिर्फ पास फटकने नहीं देता बल्कि इसके बेकटेरिया को समाज से जड़ से खतम करने के लिये हर वक़्त चिंतित रहता है। वह राष्ट्र समुदाय की ख़िदमत को अपना लक्ष्य और मकसद बना लेता है। इमाम और अध्यापकगण मानवता की सेवा में प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं। यह उदगार एवं ख्यालात मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में व्यक्त किया। मौलाना पिछले सांय अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा इमामों, प्रचारकों एवं अध्यापकों के दस दिवसीय आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स के अंतिम सत्र से संबोधित कर रहे थे।

मौलाना ने अपने संबोधन में प्रतिष्ठित कार्य समिति के सदस्यगण, सूबाई जमीअत अहले हदीस के जिम्मेदारान, मिल्ली व समाजी मार्गदर्शकों, और रेफ्रेशर कोर्स में भाग लेने वालों को इस प्रोग्राम में शिर्कत पर मुबारकबाद पेश करते हुए उनके धन्यवाद के साथ साथ उन तमाम उप जमाअती इकाइयों, मदर्सों, यूनीवर्सिटियों और संस्थाओं का भी शुक्रिया अदा किया जिन्होंने ने इस रेफ्रेशर कोर्स में शिर्कत के लिये अपने यहां से इमामों, प्रचारकों और अध्यापकों को नामित किया। उन्होंने दावत, सुधार और शिक्षा व प्रशिक्षण की अहमियत बयान करते हुए फरमाया कि यह अंबिया अलैहुमुस्सलाम (पैगम्बरों) का मिशन है और इस रास्ते में कठिनाई आज़माइश आना कोई नई बात नहीं है बल्कि यह सब दावत का खास्सा है। सबसे बड़ा इन्सान वह है जो कठिनाइयों और मुश्किलात को सहन करके अपने कर्तव्य को अदा कर ले जाए। अतः देश व समाज और अल्लाह की धरती से फसाद व बिगाड़, अत्याचार व आतंकवाद को मिटाने और अम्न व शान्ति और सुधार की राह में पेश आने वाली दुश्वरियों से घबराने के बजाए साहस, हौसला, स्थिरता का प्रदर्शन करते हुए दुनिया में फैल जाना चाहिए और अपने कर्तव्य को निभाने में किसी भी सुसती व काहिली, लापरवाही या बद्दिली को पास नहीं फटकने देना चाहिए। यह मिशन बहुत अजीमुश्शान (भव्य) है और मौजूदा हालात इसी के इच्छुक हैं। इसी के दृष्टिगत मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस

हिन्द ने इस का बेड़ा उठाया है और निरन्तरता के साथ इस का आयोजन करती है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने अपने स्वागत भाषण में मेहमानों का सवागत किया और रेफ्रेशर कोर्स में प्रतिभाग लेने वालों को इस भव्य प्रोग्राम में शिर्कत पर बधाई दी और कहा कि दावत हमारा मिशन और लक्ष्य है। यह रेफ्रेशर कोर्स मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की सेवाओं के सिलसिले की एक महत्वपूर्ण और सुनेहरी कड़ी है जिसे पिछले १८ वर्षों से पूरी सुगमता (उमदगी) के साथ अंजाम देते चले आ रहे हैं और देश समुदाय, जमाअत के मार्गदर्शक और करोड़ों दिलों की धड़कन मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी के तत्वाधान में यह सब अंजाम पा रहा है। अल्लाह तआला से दुआ कि यह काफिला (यात्रीदल) अपनी मंज़िल की तरफ यूं ही अग्रसर रहे और इस के प्रयासों को कुबूल फरमाए। रेफ्रेशर कोर्स के प्रतिभागियों से संबोधित करते हुए फरमाया कि इमाम, प्रचारक नबियों (पैगम्बरों) के उत्तराधिकारी हैं वह मिल्लत की रीढ़ की हडडी की हैसियत रखते हैं उन्हें अपनी अन्दरूनी और बाहरी ज़िन्दगी में निखार पैदा करके दावत व तालीम का हक़ अदा करना चाहिए। इल्म सीखना और इसको अपनी ज़िन्दगी में व्यवहारिक रूप देना दो अलग अलग चीज़ें हैं। हमें इल्म के मुताबिक व्यवहारिक ज़िन्दगी को संवारना चाहिए और बेहतरीन आदर्श बन कर कौम के लिए लाभकारी बनना चाहिए।

जमाअत इस्लामी हिन्द के अमीर इन्जीनियर सआदतुल्लाह हुसैनी ने कहा कि मेरे लिये यह अत्यंत सम्मान और खुशी की बात है कि इस रेफ्रेशर कोर्स के अन्तिम प्रोग्राम में शिर्कत का मौका मिला। रेफ्रेशर कोर्स में शिरकत करने वाले बड़े ही खुश नसीब हैं कि अल्लाह ने उन्हें अपने दावती मिशन के लिये चयनित किया है। आप हज़रात जिन्दगी भर सीखने का स्वभाव बनाएं, वही कौम तरक़्क़ी करती है जो कौम आख़िरी सांस तक सीखती है। फिर इस्लाम के लिये काम करने वालों के लिये तो यह और ज़रूरी हो जाता है। ज़माना बड़ी तेज़ रफतारी से तरक्क़ी कर रहा है हमें भी अपने मिशन में इतनी ही तेज़ी लानी पड़ेगी तभी कामयाबी नसीब होगी। उन्होंने मर्कज़ी जमीअत के ज़िम्मेदारान को इस रेफ्रेशर कोर्स के आयोजन पर बधाई पेश की और इसे जमीअत का बड़ा कारनामा बताया।

शाह वलीउल्लाह इन्स्टीटियूट के अध्यक्ष मौलाना अताउर्रहमान कासिमी ने इस प्रोग्राम में शिर्कत पर अपनी अथाह खुशी का इज़हार करते हुए जमीअत के ज़िम्मेदारान को इस पहल और इसके लगातार आयोजन पर बधाई पेश की और कहा कि अगर मध्यपूर्व में हमने दावत का काम किया होता तो हालात यह न होते जिनसे हम जूझ रहे हैं। इस वक़्त भी इस्लाम के प्रचार व प्रसार के मैदान में सन्नाटा है हमें इसमें तेज़ी लाने की ज़रूरत है।

मौलाना आज़ाद यूनीवर्सिटी के अध्यक्ष ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी का विशेष तौर पर और सभी जिम्मेदारान का साधारणतयः इस रेफ्रेशर कोर्स के आयोजन पर शुक्रिया अदा किया और मुबारकबाद पेश की। उन्होंने मौजूदा हालात का उल्लेख

करते हुए कहा कि दुनिया में आज मुसलमानों की घेराबन्दी हो रही है जिस की रोकथाम के लिये ओलमा को तैयार होना चाहिए। मर्कज़ी जमीअत के नेतृत्व ने इस काम का बेड़ा उठाया है इसके लिए वह मुबारकबाद की पात्र है। आज माहौल ऐसा बन गया है कि लोग बुराई को दोहराने में सकोच नहीं करते तो हम अच्छाई को दोहराने में क्यों संकोच करें। हमें इस कर्तव्य को निभाने की फिक्र करनी चाहिए जिसके हम जिम्मेदार हैं, आप एकता के सन्देशवाहक हैं इसके तक़ाज़ों को पूरा करें।

दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग के चियरमैन डा० जफरूल इस्लाम खान ने इस प्रोग्राम में शिर्कत को अपने लिये सम्मान की बात बताई और कहा कि जमीअत की तारीख बहुत पुरानी है और इसकी विभिन्न सेवाएं हैं जिन से इनकार नहीं किया जा सकता। हमें कुरआन की तालीमात को मजबूती से थाम लेना है।

अध्यापकों के अध्यापक (वरिष्ठ अध्यापक) मौलाना अबुल मकारिम अज़हरी ने जमीअत के जिम्मेदारान को इस प्रोग्राम के आयोजन पर शुक्रिया अदा किया और कहा कि मुसलसल १२ वर्षों से इस प्रोग्राम का आयोजन मुबारकबाद के योग्य है। उन्होंने रेफ्रेशर कोर्स में शिर्कत करने वालों को उपदेश देते हुए कहा कि आप हज़रात दावत का काम हिकमत और बुद्धिमता के साथ करें और अच्छी नसीहतों को दृष्टिगत रखें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के मुफती शैख जमील अहमद मदनी ने अपने संबोधन में रेफ्रेशर कोर्स के आयोजन पर मर्कज़ी जमीअत के ज़िम्मेदारान को मुबारकबाद पेश की और निरन्तर आयोजन पर उनका शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि अगर रेफ्रेशर कोर्स में प्रतिभाग लेने वालों ने इससे लाभ उठाया है तो इसका हक़ अदा करना अत्यंत आवश्यक है और अगर हक़ अदा नहीं किया तो आप ने न तो जमीअत का हक़ दिया और न ही अल्लाह के शुक्रगुज़ार हुए।

रेफ्रेशर कोर्स के कनवीनर डा० मुहम्मद शीस इदरीस तैमी ने सभी मेहमानों और प्रतिभागियों को अभिनन्दन करते हुए मर्कज़ी जमीअत की विभिन्न दीनी, दावती, तालीमी तर्बियती, कौमी, मिल्ली और मानव सेवाओं का उल्लेख किया और कहा कि यह रेफ्रशर कोर्स जिस की शुरूआत ४ अक्टूबर को हुई थी इसी मुबारक सिलसिले की एक अहम कड़ी है इसके लिये मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के सभी जिम्मेदारान शुक्रिया और बधाई के पात्र हैं। उन्होंने ने रेफ्रेशर कोर्स का विवरण भी बताया।

इस अन्तिम सत्र में सूबाई जमीअतों के जिन जिम्मेदारान ने भी अपने उदगार एवं ख्यालात पेश करते हुए रेफ्रेशर कोर्स के आयोजन पर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पदधारियों को मुबारकबाद पेश की और इस रेफ्रेशर कोर्स को वक़्त की अहम ज़रूरत क़रार दिया, इनमें मौलाना खुर्शीद आलम मदनी पटना नायाब अमीर सूबाई जमीअत बिहार, डा० सईद अहमद उमरी अमीर सूबाई जमीअत अहले हदीस आंध्रा प्रदेश, सैयद आसिफ उमरी अमीर सूबाई जमीअत तिलंगाना, मौलाना ताहा सईद खालिद मदनी अमीर सूबाई जमीअत उडीशा, मौलाना मुहम्मद अली मदनी उप महा सचिव मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

व अमीर सूबाई जमीअत बिहार, मुश्ताक अहमद सिददीक़ी कार्यवाहक अमीर सूबाई जमीअत पंजाब, मौलाना अब्दुस्सत्तार सलफी अमीर सूबाई जमीअत दिल्ली, मौलाना इरफान शाकिर सचिव सूबाई जमीअत दिल्ली, मौलाना अब्दुल कुददूस उमरी अमीर सूबाई जमीअत मध्यप्रदेश, मौलाना रियाज अहमद सलफी उप महा सचिव मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द व शैखुल जामिया जामिया अबू हुरैरा अल इस्लामिया लाल गोपाल गंज इलाहाबाद, हाफिज़ मुहम्मद अब्दुल कैयूम नायब अमीर मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द, हाफिज़ अतीकुर्रहमान तैयबी अमीर सूबाई जमीअत अहले हदीस पूर्वी यूपी. मौलाना शिहाबुददीन मदनी सचिव सूबाई जमीअत पूर्वी यूपी, मौलाना मुहम्मद इब्राहीम मदनी नायब अमीर सूबाई जमीअत पूर्वी यूपी. हाफिज़ कलीमुल्लाह सलफी उप सचिव सूबाई जमीअत पूर्वी यूपी. जनाब मुहम्मद असलम खान सचिव सूबाई जमीअत कर्नाटक व गोवा, मौलाना इनआमुल हक़ मदनी सचिव सूबाई जमीअत बिहार, मौलाना असलम जामई अमीर सूबाई जमीअत महाराष्ट्रा, मौलाना सरफराज़ असरी सचिव सूबाई जमीअत महाराष्ट्रा, मौलाना मकसूदुर्रहमान मदनी अमीर सूबाई जमीअत आसाम, मौलाना शमसुल हक़ सलफी उप सचिव सूबाई जमीअत झारखण्ड, जनाब अब्दुल हफीज़ रानडर सचिव सूबाई जमीअत अहले हदीस राजस्थान, मौलाना जकी अहमद मदनी कार्यवाहक सचिव सूबाई जमीअत पश्चिम बंगाल, मौलाना अबुल कलाम अहमद संपादक अर्रहीक़, मौलाना अमानुल्लाह मदनी डायरेकटर माहद हफसा लिलबनात जोहरा बाग बसमतिया, जनाब अताउल्लाह अनवर पर्वू अनुवादक पटना हाई कोर्ट, मौलाना अब्दुल मुबीन दनवी अध्यापक जामिया रियाजुल उलूम दिल्ली, मौलाना जिल्लुर्रहमान मदनी अनुवादक हरम शरीफ, मौलाना अब्दुर्रहमाना सलफी उप सचिव सूबाई जमीअत केरल, मौलाना अज़ीज़ अहमद मदनी अध्यापक अल माहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामिया दिल्ली, मौलाना मुहम्मद अमीन रियाजी सचिव सूबाई जमीअत मुंबई उल्लेखनीय हैं।

इस महत्वपूर्ण सत्र में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की कार्य समिति के प्रतिष्ठित सदस्यगण और सूबाई जमीअतों के जिम्मेदारान ने खास तौर से शिर्कत की। इस अवसर पर दिल्ली और उसके आस पास के क्षेत्रों से सम्माननीय शख्सियात और अवाम की बड़ी तादाद मौजूद थी। रेफ्रेशर कोर्स में प्रतिभाग लेने वालों को अमीरे मोहतरम, महा सचिव, उनके नायबीन, कोषाध्यक्ष और प्रतिष्ठित मेहमानों के हाथों प्रशस्तिपत्र (तौसीफ़ी सनद) और अन्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रोग्राम की शुरूआत रेफ्रेशर कोर्स में शरीक हाफिज मुहम्मद इरशाद की तिलावत कुरआन पाक से हुई। आखिर में मर्कज़ी जमीअत अहीस हिन्द के कोषाध्यक्ष अलहाज वकील परवेज़ ने तमाम मेहमानों, रेफ्रेशर कोर्स में भाग लेने वालों और अन्य उपस्थितिगण हज़रत का दिल की गहराइयों से शुक्रिया अदा किया और आशा व्यक्त की कि इस भव्य प्रोग्राम से उन्होंने भरपूर लाभ उठाया होगा और इससे कौम व मिल्लत को फायदा पहुंचाएंगे। (जरीदा तर्जुमान १-१५ नवंबर २०१६)

❑ ❑ ❑

शराब के नुकसानात

अब्दुल जब्बार इनआमुल्लाह सलफी

इस वक़्त मानव-समाज के अन्दर इतनी बुराइयां पैदा हो गई हैं कि उनको गिन्ती में लाना भी संभव नहीं है और जिन की वजह से समाज दिशाहीन होकर रह गया है। आम लोग इन बुराइयों में लिप्त होते चले जा रहे हैं अगर इन बुराइयों की रोक थाम न की गई और इन बुराइयों को खतम करने का कोई उपाय न किया गया तो पूरा इन्सानी समाज इन बुराइयों से अपना दामन दागदार कर लेगा। फिर इनसे बचाव का कोई तरीक़ा कारगर नहीं हो सकेगा। दुनिया के अन्दर पाई जाने वाली बुराइयों में से एक सबसे बड़ी बुराई शराब नोशी है जो इस वक़्त बिलकुल आम हो गई है।

कुरआन व हदीस के अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि अगर शराब नोशी में एक तरफ दुनिया और परलोक का खसारा है तो दूसरी तरफ जिसमानी और रूहानी नुकसान भी है यानी शराब हर पहलू से बहुत ही ज़्यादा हानिकारक और खतरनाक चीज़ है। पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि शराब तमाम बुराइयों की जड़ है। यहां पर कुछ खराबियों की निशानदेही की जा रही है।

शराब का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि वह अधिकांश लड़ाई झगड़े का कारण बनती है और इन्सानों के बीच संबन्ध विच्छेद करा देती है। इस्लाम की नज़र में चूंकि यह बुरी चीज़ है इसलिये कुरआन में खास तौर से इस खराबी की निशानदेही की गयी है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''शैतान चाहता है कि शराब और जुवा के जरिए तुम्हारे आपस में बुग्ज़ व अदावत (दुश्मनी) डाल दे''।

दूसरी ख़राबी यह है कि शराब इन्सान को अल्लाह की इबादत और नमाज़ पढ़ने से रोक देती है और यह इसका रूहानी नुकसान है क्योंकि नशा की हालत में न नमाज़ हो सकती है और न अल्लाह का ज़िक्र और न कोई दूसरी इबादत। इस लिये कुरआन की आयत में साफ तौर पर इस के नुकसान की तरफ इशारा किया गया है।

''और शैतान तुम को शराब के ज़रिये अल्लाह के ज़िक्र और नमाज से रोकना चाहता है''

हदीस में शराब के नुकसान और हानिकारक होने की निशानदेही की गई है। अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने नशे की वजह से एक वक़्त की नमाज़ खो दी तो मानो कि उसको दुनिया की जो दौलत हासिल थी, छिन गई और जिसने नशे की वजह से चार वक़्त की नमाज़ खो दी तो अब अल्लाह को अधिकार है कि उसको तीनतुल ख़बाल पिलाये लोगों ने पूछा कि तीनतुल ख़बाल क्या है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया जहन्नमियों के शरीर से निचोड़ी हुई गंदगी (तफसीर इब्ने कसीर भाग १ पृष्ठ-१४) उस्मान बिन अफ्फान रज़िअल्लाहो अन्हो का बयान है कि शराब से बचते रहो क्योंकि वह सारी बुराइयों की जड़ है (तफसीर इब्ने कसीर भाग१ पृष्ठ-१४)

इन्सान के शरीर पर शराब से पड़ने वाले नुकसानात यह हैं कि शराब धीरे धीरे मेदे के काम को खराब कर देती है खाने की इच्छा कम कर देती है, चेहरे की बनावट बिगाड़ देती है, पेट बढ़ जाता है। सामूहिक तौर पर पूरे शरीर पर

इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जर्मनी के एक डाक्टर ने बयान किया है कि जो शख्स शराब का आदी हो तो चालिस साल की उमर में उसके बदन की बनावट ६० साल के बूढ़े जैसी हो जाती है। (मआरिफुल कुरआन)

इसके अलावा शराब जिगर और गुर्दों को ख़राब कर देती है सिल (फेफड़े का मर्ज हो जाने) की सबसे बड़ी वजह शराब है। यूरोप के शहरों में सिल की अधिकता का बड़ा सबब शराब नोशी (मदिरापान) ही को बताया जाता है। वहां के बाज़ डाक्टरों का कहना है कि यूरोप में आधी मौत सिल (फेफड़े के मर्ज) से होती और आधी दूसरे मर्ज में और यूरोप में इस मर्ज की अधिकता वहां पर ज़्यादा शराब पीने की वजह से हुई।

डाक्टर इस बात पर सहमत हैं कि शराब से न इन्सान का शरीर पनपता है और न इससे खून बनता है शराब से केवल खून में उबाल पैदा होता है जिस से वक़्ती पर शरीर में ताक़त का एहसास होने लगता है और अचानक खून में उबाल पैदा होना कभी कभार अचानक मौत का कारण बन जाता है जिसको डाक्टर हार्ट अटैक क़रार देते हैं।

शराब पूरे शरीर में खून पहुंचाने वाली रगों को सख्त कर देती है जिससे बुढ़ापा जल्द आता है, श्वास की बीमारी हो जाती है, आवाज़ में भारीपन आ जाता है, और दायमी खांसी हो जाती है। (मआरिफुल कुरआन भाग १ पृष्ठ ४७२)

❑ ❑ ❑

अहले हदीस कम्पलैक्स और अहले हदीस मंज़िल के दोनों इतिहासिक और महान निमार्ण कार्यों के सिलसिले में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल विभिन्न राज्यों के दौरे पर। इन्शाअल्लाह

जमाअती मित्रों और कौम व मिल्लत के शुभचिंतकों को मालूम है कि अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली और अहले हदीस मंज़िल जामा मस्जिद दिल्ली में दो भव्य तारीखी बिलडिंगों के निमार्ण का काम जारी है। इस सिलसिले में अल हम्दुलिल्लाह अहले हदीस कम्पलैक्स के महान निमार्ण प्रोजेक्ट की दूसरी मंज़िल की ढ़लाई का काम होने वाला है और उर्दू बाज़ार में अहले हदीस मंज़िल की तीसरी मंज़िल के निमार्ण का काम मुकम्मल हुआ चाहता है जो अल्लाह के फ़ज़्ल व तौफीक़ के बाद जमाअत व जमीअत के मोहसिनीन की सखावत व दानवीरता की देन है। अधिकृत सहयोग के लिये जमाअत के अहबाब सूबाई जमीअतों से तनसीक़ के बाद मस्जिदों में बाजाबता और मुसलसल एलान फरमायें। जल्द ही मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल आप की ख़िदमत में हाज़िर हो रहा है। इस महान और तारीखी खैर के काम में अपना भर पूर हिस्सा और रोल अदा करके पुण्य के पात्र बनें।

नोटः- इस सिलसिले में संबन्धित राज्यों के पदधारियों और ज़िम्मेदारान को सूचना कर दी गयी

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c No. 629201058685 (ICIC Bank) Chandni Chowk, Delhi-110006
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)
4116, बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-६ Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द

अम्न व शान्ति का सन्देश राष्ट्र एवं समुदाय के नाम और हर प्रकार के दंगा व फसाद से बचने का उपदेश

(प्रेस रिलीज़)

दिल्ली ५ नवंबर २०१९

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने अखबार के नाम जारी अपने एक महत्वपूर्ण बयान में न केवल हिन्दुस्तानी मुसलमानों बल्कि सभी देशबन्धुओं को इस महीने बाबरी मस्जिद व राम जन्म भूमि मामले से संबन्धित सुप्रीम कोर्ट के प्रत्याशित फैसले के परिदृष्य में अम्न व शान्ति बनाए रखने और किसी भी प्रकार की नकारात्मक प्रतिक्रिया से दूर रहने की अपील की है।

उन्होंने अपने बयान में कहा कि बाबरी मस्जिद व राम जन्म भूमि मामला हिन्दुस्तानी मुसलमानों व अन्य देशबन्धुओं के लिये लम्बे अर्से से अत्यंत संवेदनशील और संगीन बना हुआ है। सुप्रिम कोर्ट में इसके विचाराधीन स्वामित्व अधिकार (मालिकाना हक़) के फैसले का एलान जारी महीने नवम्बर २०१९ में आने की पूरी संभावना है अतः इस नाजुक चरण में हम सभी देशबन्धुओं की ज़िम्मेदारी है कि हम एक दूसरे को इस बात का उपदेश करें कि इस अवसर पर सब्र व शान्ति का प्रदर्शन करेंगे। किसी भी प्रकार के खलफशार, शोर, प्रोपैगण्डा, हिंसा और हंगामा से दूर रहेंगे, अच्छे और शान्तिपूर्ण नागरिक, राष्ट्र व देश के शुभचिंतक होने और अदालत के फैसले का पूर्ण रूप से सम्मान करने का सुबूत देंगे और सोशल मीडिया पर टिप्पणी और गलत प्रोपैगण्डे से बचेंगे और अगर कहीं ऐसा होता है तो खुद भी होशियार रहेंगे और दूसरों को भी होशियार रहने का उपदेश करें गे ताकि प्रिय देश में अम्न व शान्ति, मुहब्बत, भाईचारा स्थापित रहे और किसी तरह से अशान्ति का माहौल पैदा न हो सके। यही हमारा तरीका और यही हमारी सभ्यता है और तमाम धर्म इसी की शिक्षा देते हैं। इस अवसर पर हम इन बातों का विशेष ख्याल रखें :

१. विशेष दुआ करें कि अल्लाह हक़ को ज़ाहिर कर दे और उसके जायज़ मालिकान के हक़ में फैसला करवा दे और अपने खास कृपा से ऐसे हालात पैदा कर दे कि इस नाजुक मौके पर किसी भी प्रकार की

> तमाम देश्वासियों विशेष रूप से मुसलमानों ने पूर्ण रूप से अम्न व शान्ति, भाईचारा और शिष्टाचार का प्रदर्शन किया। न किसी तरह का फसाद होने दिया और न ही वह किसी तरह के फसाद का हिस्सा बने और आशा है कि वह भविष्य में भी इन्शाअल्लाह इस अम्न व शान्ति और भाई चारा के वातावरण को बाक़ी रखेंगे। लेकिन इस फैसले के बाद सोशल मीडिया और अन्य मीडिया में जो अटकलबाजियां और तरह तरह के जो कुछ आरोप और झूठे प्रोपैगण्डे किए जा रहे हैं इससे होशियार और चौकन्ना रहने की ज़रूरत है।

कोई असुगम घटना पेश न आए और देश व समुदाय और देश वासियों के लिए भलाई व बकरत का सबब हो।

२. बिला लिहाज़ मसलक व मज़हब तमाम हिन्दुस्तानियों में यह जागरूकता पैदा करने की भरपूर कोशिश की जाए कि वह अदालत के फैसले पर बुद्धिमत्ता और अकलमन्दी से काम लें और हर हाल में कोई भी ऐसी प्रतिक्रिया व्यक्त न करें गे जिससे किसी तरह की चिंता पैदा हो बल्कि शुक्र व सब्र का दामन थामे रहेंगे।

३. हर पढ़े लिखे और सचेत एवं किसी भी पद पर विराजमान व्यक्ति की ज़िम्मेदारी है कि वह क़ौम व मिल्लत की सहीह रहनुमाई करें और अपने पद के कर्तव्य को महसूस करते हुए हर संभव कोशिश करें कि अम्न व शान्ति का पैगाम ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंचे। देश भर के प्रभावी हज़रात और खास तौर से मस्जिदों के इमाम और खतीब हालात के दृष्टिगत इन निर्देशों को साधारण करें और जन सामान्य को अम्न व शान्ति को बनाए रखने की प्रेरणा दें ताकि यह नाजुक घड़ी सुगम तरीके से गुज़र जाए और प्रिय देश में गंगा जमुनी सभ्यता की विविधता बाकी रहे और स्वार्थियों एवं अवसरवादियों और देश व समुदाय के अशुभचिंतकों को किसी भी तरह खलफशार फैलाने का मौक़ा हाथ न आए।

उन्होंने यह भी कहा कि इस तरह के निर्देशों पर आधारित एक सरकुलर प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस के माध्यम से हिन्दुस्तान भर में फैली हुई जमीअत की इकाइयों को भेजा जा चुका है और आशा व्यक्त की गई है कि वह अम्न व शान्ति और भाई चारा के मिशन में पूर्व परंम्परा के अनुसार इस वक़्त भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

जारी कर्ता

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

यह बात सबको मालूम है कि अयोध्या मामले का फैसला आने से पहले हम सभों ने तमाम नागरिकों को अम्न व शान्ति के साथ रहने और न्यायालय के फैसले का सम्मान की अपील की थी जिस का मनोवांछित प्रभाव पूरे देश में देखने को मिला। तमाम देशवासियों विशेष रूप से मुसलमानों ने पूर्ण रूप से अम्न व शान्ति, भाईचारा और शिष्टाचार का प्रदर्शन किया। न किसी तरह का फसाद होने दिया और न ही वह किसी तरह के फसाद का हिस्सा बने और आशा है कि वह भविष्य में भी इन्शाअल्लाह इस अम्न व शान्ति और भाई चारा के वातावरण को बाक़ी रखेंगे। लेकिन इस फैसले के बाद सोशल मीडिया और अन्य मीडिया में जो अटकलबाजियां और तरह तरह के जो कुछ आरोप और झूठे प्रोपैगण्डे किए जा रहे हैं इससे होशियार और चौकन्ना रहने की ज़रूरत है और आम लोगों को फुजूल बहसों में पड़ कर वक़्त और एनर्जी बर्बाद करने से परहेज़ करना बेहतर है और जो ज़िम्मेदारान मुकदमे के पक्षकार रहे हैं वह इस सिलसिले में क्या सोचते हैं और क्या फैसला लेते हैं यह उन पर निर्भर है। हम को इस पर अनुचित टिप्पणी से बाज रहना चाहिए। पूरी दुनिया विशेष रूप से प्रिय देश में अम्न व शान्ति का वातावरण बनाए रखने पर हार्दिक बधाई। अल्लाह हम सबको नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श का अनुयाई और सलफ के विचारधारा का पाबन्द बनाए।

वक़्त और सेहत का स्तेमाल

नौशाद अहमद

यह दुनिया आजमाइश की जगह है, हर इन्सान की किसी न किसी तरह से इस दुनिया में आजमाइश होती रहती है यहीं से इन्सान की कामयाबी और नाकामी की बुनियाद बनती है जो इस आज़माइश में कामयाब हो जाता है उसके लिये आख़िरत (परलोक) के दिन का रास्ता आसान हो जाता है।

किसी को बीमारी दे कर आजमाइश की जाती है, किसी को स्वास्थ देकर इमतेहान लिया जाता है। इस में दोनों की आजमाइश है बीमार इन्सान की परीक्षा यह है कि इस संसार का पालनहार यह देखना चाहता है कि वह बीमारी की हालत में मेरा शुक्र (धन्यवाद) अदा करता है, मेरी नेमत की कद्र करता है या बीमारी से झल्लाकर ओल फोल तो नहीं बोलता है? कामयाब वही है जो बीमारी की हालत में भी अपने पालनहार का शुक्रिया अदा करता है और अपने पालनहार की दी हुई नेमतों की प्रशंसा और गुनगान करता है। आम तौर से देखा जाता है कि लोग निरन्तर दुख की घड़ी में अकहनीय वाक्य बोल जाते हैं, यहीं पर उसके धैर्य का भी इम्तेहान होता है। स्वास्थ्य वाले इन्सान का भी इमतेहान है। अल्लाह अपने बन्दों को सेहत की दौलत देकर आज़माता है कि बन्दा मेरी इस नेमत की कद्र करता है या नहीं। इस नेमत की कद्र और सम्मान का मतलब यह है कि बन्दे की आजमाइश यह होती है कि उसके स्वामी और पालनहार ने सेहत जैसी जो बहुमूल्य नेमत दे रखी है उसका स्तेमाल कैसे करता है। ऐसा तो नहीं कि वह अपनी सेहतमन्द जिन्दगी को यूं ही बेकार कामों में खर्च करता है, अपने वक़्त को यूं ही बर्बाद कर देता है। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि दो चीज़ों के बारे में इन्सान गफलत का शिकार रहता है एक वक़्त के बारे में दूसरे सेहत तन्दुरूस्ती के बारे में।

वक़्त की बड़ी अहमियत है लेकिन आज के कुछ लोग अपने वक़्त को यूं ही गवां देते हैं, उनको यह मालूम ही नहीं होता है कि हमारी ज़िन्दगी के वक़्त की क्या कीमत है। सोशल मीडिया ने इन्सान के जीवन के स्तर को बदल कर रख दिया है, सोशल मीडिया भी आज के इन्सान के लिये एक आजमाइश और परीक्षा है, जो लोग सोशल मीडिया के माध्यम से अच्छी बातों और अच्छे मूल्यों को फैला रहे हैं उनके लिये सोशल मीडिया भी एक बड़ी नेमतों में से है लेकिन उन लोगों के लिये सोशल मीडिया किसी ज़हर से कम नहीं है जो नकारात्मक बातों के द्वारा गलत फहमी फैला रहे हैं, और इसको अपने स्वार्थ की प्राप्ति का माध्यम समझ बैठे हैं, वक़्त सेहत, सोशल मीडिया और इस तरह की दूसरी नेमत उसी वक़्त सकारात्मक हो सकती है जब हम इसका सहीह स्तेमाल करें वर्ना हर चीज़ इन्सान के लिये व्यर्थ और बेकार साबित होगी। अब यह अक़्ल रखने वाले इन्सान पर निर्भर है कि वह वक़्त सेहत और सोशल मीडिया को कैसे इस्तेमाल में लाना चाहता है।

हम तमाम इन्सानों की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि हम अल्लाह की नेमतों का स्तेमाल इस तरीक़े से करें कि वह हमारे लिये इबादत और इस संसार के स्वामी की समीपता और खुशी का माध्यम बन जाए।